महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
Accredited with 'A' Grade by NAAC

मूल्य की ही साधना है शिक्षा -कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

वर्धा दि. 30 मार्च 2015: शिक्षा मूल्य की ही साधना है। वह मनुष्य बनने की प्रक्रिया है और वह मनुष्य होने को आसान भी बनाती है। आज मोबाईल और आइपॉड जैसे शिक्षा के उपकरणों के आने से सीखने के तौर-तरीके भी बदल गए है। उन उपकरणों का शिक्षा में उपयोग आवश्यक हो गया है। उक्त प्रतिपादन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किए।

वे विश्वविद्यालय में शिक्षा एवं मनोविज्ञान विभाग तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 28, 29 एवं 30 मार्च को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन के अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे। इस अवसर पर मंच पर आईआईटी कानपुर की प्रो. लीलावती कृष्णन, जेएनयू, नई दिल्ली के प्रो. अरविंद कुमार मिश्र, प्रो. बालकृष्ण उपाध्याय, विवि के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता तथा संगोष्ठी संयोजक प्रो. अरबिंद कुमार झा, नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा उपस्थित थे।

तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सोमवार को हबीब तनवीर सभागार में किया गया। समारोह में विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागियों को कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। कुलपति प्रो.मिश्र ने शिक्षा और मूल्य पर अपनी बात रखते हुए कहा कि दूसरे की चिंता करना ही मूल्य है। हमें खूद की बजाए दूसरों का अधिक मूल्यांकन करना चाहिए। इससे आप बड़े होने के अधिकारी बन सकते हैं। आत्ममुग्धता और आत्मलीनता ही हमारे भीतर के मूल्यों की बड़ी त्रासदी है। हम आत्मगौरव में डूबे होते है और यह बात किसी गुब्बारे में हवा भरने जैसी होती है। हमें चाहिए कि मूल्य को आत्मसात कर मूल्यवान बनें।

उन्होंने शिक्षा विद्यापीठ के अंतर्गत मूल्य अध्ययन और अनुसंधान केंद्र स्थापित किए जाने की घोषणा भी अपने अध्यक्षीय संबोधन में की। समापन पर प्रो. लीलावती कृष्णन ने कहा कि जीवन में हर दिन नया सीखने का दिन होता है। शोध करते समय हमें शोध की सीढी चढते रहना चाहिए और शोध को गुणवत्ता पूर्ण बनाना चाहिए। प्रो. अरबिंद कुमार झा ने मनुष्य के जीवन में मूल्यों को लेकर पैदा हुए संकट पर विस्तार से विमर्श किया। प्रो. सुरेश शर्मा ने कहा कि दृश्य और श्रव्य के माध्यम से भी शोध होना चाहिए ताकि सिनेमा और धारावाहिकों पर मूल्यपरक शोध किया जा सके। प्रो. अरविंद कुमार मिश्र और बालकृष्ण उपाध्याय ने भी अपने मंतव्य दिए। संगोष्ठी के प्रतिभागी सलमा, झारखंड, संजय कुमार, राजस्थान तथा विश्वविद्यालय की शोधार्थी अनुपमा ने भी अपनी बात रखी। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर ऋषभ मिश्र ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मनोविज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर अजय प्रताप सिंह ने किया। समारोह में विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठाता, अध्यापक, अधिकारी, शोधार्थी, प्रतिभागी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।